24

Code—11

HINDI LITERATURE

Time Allowed : 3 Hours *Maximum Marks :* 150

नोट : कुल पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए । प्रत्येक प्रश्न के अंक 30 हैं । प्रश्न क्रमांक **1** अनिवार्य है । खण्ड 'I' से किन्हीं **दो** प्रश्नों तथा खण्ड 'II' से किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिए । प्रत्येक प्रश्न के खण्डों का उत्तर एक साथ दीजिए ।

1. निम्नलिखित में से किन्हीं **चार** पर आलोचनात्मक टिप्पणियाँ लिखिए : **(4×7½=30)**

(अ) अपभ्रंश भाषा और उसके प्रमुख रूप

(ब) आधुनिक हिन्दी में लिंग और वचन व्यवस्था

(स) नाथ साहित्य

(द) कबीर भाषा के डिक्टेटर थे

(इ) नागार्जुन की काव्य-संवेदना और भाषाशैली

(फ) महिला कथासाहित्यकार कृष्णा सोबती ।

P.T.O.

खण्ड 'I'

2. वैज्ञानिक एवं तकनीकी भाषा के स्वरूप को स्पष्ट करते हुए हिन्दी में पारिभाषिक शब्दावली के निर्माण को सुलझाने की दिशाएँ रेखाङ्कित कीजिए । (30)

3. रीतिकालीन साहित्य के समुचित एवं प्रासङ्गिक आस्वादन के प्रतिमान क्या हो सकते हैं ? आलोचना कीजिए । (30)

4. क्या नाटक का अभिनेय होना आवश्यक है ? अभिनेयता और नाटकीय उत्कर्ष की दृष्टि से 'अन्धेर नगरी' और 'चन्द्रगुप्त' की तुलना कीजिए । (30)

खण्ड 'II'

5. निम्नलिखित पद्यांश/गद्यांश में से किन्हीं **दो** की व्याख्या कीजिए और उनकी सौन्दर्यगत विशेषताओं को स्पष्ट कीजिए : (30)

(अ) ये अश्रु राम के आते ही मन में विचार
उद्वेल हो उठा शक्ति खेल सागर अपार
हो श्वसित पवन उनचास पितापक्ष से तुमुल
एकत्र वक्ष पर बहा बाष्प हो उठा अतुल,
शतघूर्णावर्त तरंग भंग उठते पहाड़
जलराशि राशि जल पर चढ़ता खाता पछाड़
तोड़ता बन्ध प्रतिसंध धरा, हो स्फीत वक्ष
दिग्विजय-अर्थ प्रतिफल समर्थ बढ़ता समक्ष ।

(ब) जिस प्रकार आत्मा की मुक्तावस्था ज्ञानदशा कहलाती है, उसी प्रकार हृदय की यह मुक्तावस्था रसदशा कहलाती है । हृदय की इसी मुक्ति की साधना के लिए मनुष्य की वाणी जो शब्द-विधान करती आयी है उसे कविता कहते हैं । साधना को हम भावयोग कहते हैं तथा उसे कर्मयोग और ज्ञानयोग का समकक्ष मानते हैं ।

(स) कहते हैं, पर्वत शोभानिकेतन होते हैं । फिर हिमालय का तो कहना ही क्या ? पूर्व और अपर समुद्र—महोदधि और रत्नाकर दोनों को दोनों भुजाओं से थामता हुआ हिमालय 'पृथ्वी का मानदण्ड' कहा जाय तो गलत क्या है ? कालिदास ने ऐसा ही कहा था ।

6. 'दिव्या' के औपन्यासिक प्रतिमानों का विश्लेषण करते हुए यशपाल के ऐतिहासिक बोध के दार्शनिक आधार की समीक्षा कीजिए । (30)

7. "'शेखर : एक जीवनी' व्यक्ति का अभिन्नतम दस्तावेज होने के साथ-साथ उसके युग-सन्दर्भ का प्रतिबिम्ब भी है ।" इस कथन की तर्क-सम्मत समीक्षा कीजिए । (30)